अक्षय तृतीया का उत्सव

शनिवार, २२ अप्रैल, २०२३

शाम्भवी क्रिश्चन द्वारा लिखित

सिद्धयोग पथ पर, हमारे गुरुजनों ने हमें सिखाया है कि हम हरेक क्षण को इस दृष्टिकोण से देखें कि उसमें मांगल्य समाहित है। भारत में 'मांगल्य' का सम्मान उसी तरह किया जाता है, उसे उसी तरह समझा व अपनाया जाता है जैसे कि किसी नितान्त महत्त्वपूर्ण व पावन वस्तु का किया जाता है। इसलिए अक्षय तृतीया का त्यौहार मनाना अत्यन्त शक्तिपूर्ण है। ऐसा क्यों है? भारतीय शास्त्र इस दिन का गुणगान करते हैं और यह समझाते हैं कि अक्षय तृतीया का प्रत्येक क्षण शुभ होता है।

संस्कृत में 'अक्षय' का अर्थ है, 'शाश्वत' या 'अनश्वर' या 'अविनाशी'। और भारतीय पंचांग के अनुसार वैशाख माह की तृतीया अर्थात् 'अक्षय तृतीया' को साल के सबसे शुभ साढ़े तीन दिनों में से एक माना जाता है; पश्चिमी कैलेन्डर के अनुसार यह त्यौहार अप्रैल या मई माह में आता है।

भारतीय ज्योतिषशास्त्र के अनुसार अक्षय तृतीया पर सूर्य व चन्द्रमा इस प्रकार संरेखित होते हैं कि उनकी स्थिति सबसे हितकारी और सबसे दीप्तिमान होती है। अनेक धर्मनिष्ठ हिन्दू इस दिन का चयन महत्त्वपूर्ण पर्व, जैसे कि विवाह के अयोजन हेतु करते हैं; और साथ ही वे इस दिन को किसी नए कार्य व व्यवसायिक उद्योग की शुरुआत के लिए भी चुनते हैं।

हमेशा की तरह, सिद्धयोग पथ पर, जब भी कोई शुभ दिन होता है तो सभी सिद्धयोगियों को यह पता होता है कि सिद्धयोग के अभ्यासों को करने के लिए यह *सर्वोत्तम* दिन है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस दिन साधना का फल कई गुना बढ़ जाता है। यह केवल एक आलंकारिक वाक्य नहीं है। किसी शुभ दिन पर वातावरण में अत्यधिक घनीभूत ऊर्जा स्पन्दायमान होती है।

भारतीय शास्त्रों में अक्षय तृतीया से सम्बन्धित कई सारी पौराणिक कथाएँ, कहानियाँ व शुभ घटनाएँ हैं। व्यक्ति जो ग्रन्थ पढ़ रहा है, उसके अनुसार वह विभिन्न देवी-देवताओं, ऋषि-मुनियों और पवित्र स्थानों के बारे में पढ़ सकता है। उदाहरण के लिए, इस दिन एक सबसे महान ऋषि, परशुराम जी का जन्मदिवस मनाया जाता है; उन अमर योद्धा का जो भगवान विष्णु के छठे अवतार थे।

अक्षय तृतीया वह दिन भी है जब पूजनीय महर्षि वेदव्यास जी ने 'महाभारत' की रचना आरम्भ की थी। और पुराणों के अनुसार इस दिन त्रेतायुग का आरम्भ हुआ था जो कि चार युगों में से दूसरा युग है। महाभारत में एक सुन्दर व अद्‌भुत कथा है जिसमें यह बताया गया है कि किस प्रकार इस दिन पाण्डवों को भगवान श्रीकृष्ण से वरदान स्वरूप 'अक्षयपात्र' प्राप्त हुआ। 'अक्षयपात्र' ने पाण्डवों को उनके वनवास के दौरान पर्याप्त भोजन प्रदान किया।

इस कारण, अनेक लोग ऐसा मानते हैं कि इस शुभ दिन पर जो भी अर्जित किया जाता है वह कई गुना बढ़ जाता है। इसलिए एक अन्य कथा के अनुसार अक्षय तृतीया के दिन देवी महालक्ष्मी के भक्तजन, उनकी विशेष पूजा करते हैं। इस दिन, कई लोग सोने और चाँदी से बने सिक्कों व आभूषणों में निवेश कर दैवी नक्षत्रों की आभा को अपने जीवन में लाते हैं, और इस प्रकार स्वर्ग व पृथ्वी के बीच, परमात्मा और जीवात्मा के बीच सम्बन्ध स्थापित करते हैं, जो कि ऐक्य को दर्शाता है।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।